

पानी भरे टब में
दूबकर बच्चे की मौत
भगतपुर, अमृत विचार : भगतपुर
थाना क्षेत्र के गांव मल्हुपुरा हरदोड़ी
में 14 महं बच्चे की पानी भरे टब
में दूबकर मौत हो गई।

गांव के जैनल आवेदीन के घर में
बुधवार सुबह कपड़े धोने के लिए
प्लास्टिक के टब में पानी भरा था।

करीब 12 बच्चे मोहम्मद जैद खेलते
समय पानी से भरे टब के करीब

पहुंच गया और अचानक टब में गिर
गया। काफी देर तक टब में ही सके।

हांठ समय के बाद परियों को
मोहम्मद जैद की गैर मौजूदगी का

एहसास हुआ तब उसकी तलाश की।

इसी दौरान उन्होंने टब की तरफ देखा

था। जैनल आवेदीन की पली मुस्कान

की नजर टब में पड़े जैद पर पड़ी तो

उसकी चीख निकल गई। परिजन

उसे तुरंत मुरादाबाद के एक निजी

अधिवक्ताओं ने संसद से कहा कि

वह संसद में पश्चिमी उत्तर प्रदेश

में इलाहाबाद हाईकोर्ट की बैच

1 दिसंबर से शुरू होने वाले संसद के शीतकालीन सत्र में इस मुद्दे को उठाने की मांग की हाईकोर्ट की बैच स्थापना के लिए संसद आवास का किया घेराव

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

• अधिवक्ताओं ने संसद से की
समाधान की मांग

अमृत विचार : हाईकोर्ट स्थापना के द्वारा उत्तर प्रदेश के आवास के बारे में पानी भरे टब के बारे में बुधवार सुबह कपड़े धोने के लिए प्लास्टिक के टब में पानी भरा था। करीब 12 बच्चे मोहम्मद जैद खेलते समय पानी से भरे टब के करीब पहुंच गया और अचानक टब में गिर गया। काफी देर तक टब में ही सके। कहा रहा। कुछ समय के बाद परियों को अधिवक्ताओं ने सपा सांसद में हाईकोर्ट विचारी के निवास का घेराव किया। उन्हें ज्ञापन सौंपकर आग्रह किया कि वह 1 दिसंबर से शुरू हो रहे संसद के शीतकालीन सत्र में संसद में इस मुद्दे को प्रमुखता से उठाए।

दिवार के बारे में एसोसिएशन एंड लाइवरी हरियाणा चंडीगढ़ हाईकोर्ट, दिल्ली हाईकोर्ट, मध्य प्रदेश हाईकोर्ट की बैच का न होना प्राकृतिक न्याय का सिद्धांत सत्ता की दूरी पश्चिमी उत्तर प्रदेश से उठाए।



संसद रुचिवीरा को ज्ञापन देते अधिवक्ता।

की रणनीति तैयार की जाएगी।

इस दौरान बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष आदेश श्रीवास्तव, अशोक कुमार सक्षेत्रा, पूर्व महासचिव राकेश जौहरी, अधिकारी भट्टनागर, आदित्य कुमार श्रीवास्तव, संजीव राधव, अंतुल माशूर, आविद अली, मुश्तर रेन गुप्ता, शहजाद सलीम, तवस्मा, रेन गुप्ता, आरामदार शर्मा, शाइकरा परवीन, रमा पंत पांडे, पंकज शर्मा, अभिनव भट्ट, फिरोज आलम, सचिन कुमार, अंजार हुसैन, अजय बंसल, आशीष उपाध्याय, शिवकमार कैट्रीवरी संघर्ष समिति के आदेश विद्या है। संघर्ष समिति के बारे में विद्या निर्देशों के अनुसार आगे अधिकारी ने अधिकारी को ज्ञापन देते अधिकारी ने आधी है। अधिवक्ताओं ने कहा कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश संघर्ष समिति के आवास के घेराव करते उन्हें ज्ञापन दिया जाएगा।

इलाहाबाद हाईकोर्ट की दूरी से बार एसोसिएशन के महासचिव ने कहा कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश संघर्ष समिति के आवास के घेराव करते उन्हें ज्ञापन दिया जाएगा।

कहा कि विद्या है। इसके बाद एसोसिएशन के आदेश विद्या ने अधिकारी को ज्ञापन देते अधिकारी ने आधी है। अधिवक्ताओं ने कहा कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश संघर्ष समिति के आवास के घेराव करते उन्हें ज्ञापन दिया जाएगा।

इलाहाबाद हाईकोर्ट की दूरी से बार एसोसिएशन के महासचिव ने कहा कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश संघर्ष समिति के आवास के घेराव करते उन्हें ज्ञापन दिया जाएगा।

इलाहाबाद हाईकोर्ट की दूरी से बार एसोसिएशन के महासचिव ने कहा कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश संघर्ष समिति के आवास के घेराव करते उन्हें ज्ञापन दिया जाएगा।

इलाहाबाद हाईकोर्ट की दूरी से बार एसोसिएशन के महासचिव ने कहा कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश संघर्ष समिति के आवास के घेराव करते उन्हें ज्ञापन दिया जाएगा।

इलाहाबाद हाईकोर्ट की दूरी से बार एसोसिएशन के महासचिव ने कहा कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश संघर्ष समिति के आवास के घेराव करते उन्हें ज्ञापन दिया जाएगा।

इलाहाबाद हाईकोर्ट की दूरी से बार एसोसिएशन के महासचिव ने कहा कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश संघर्ष समिति के आवास के घेराव करते उन्हें ज्ञापन दिया जाएगा।

इलाहाबाद हाईकोर्ट की दूरी से बार एसोसिएशन के महासचिव ने कहा कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश संघर्ष समिति के आवास के घेराव करते उन्हें ज्ञापन दिया जाएगा।

इलाहाबाद हाईकोर्ट की दूरी से बार एसोसिएशन के महासचिव ने कहा कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश संघर्ष समिति के आवास के घेराव करते उन्हें ज्ञापन दिया जाएगा।

इलाहाबाद हाईकोर्ट की दूरी से बार एसोसिएशन के महासचिव ने कहा कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश संघर्ष समिति के आवास के घेराव करते उन्हें ज्ञापन दिया जाएगा।

इलाहाबाद हाईकोर्ट की दूरी से बार एसोसिएशन के महासचिव ने कहा कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश संघर्ष समिति के आवास के घेराव करते उन्हें ज्ञापन दिया जाएगा।

इलाहाबाद हाईकोर्ट की दूरी से बार एसोसिएशन के महासचिव ने

અમૃત વિચાર કે છદ્વે સ્થાપના દિવસ કી હાર્દિક શુભકામનાએ
કેવળ સર્તી કીમત કે લિએ નહીં, સ્થાયી મૂલ્ય કે લિએ સહી સોના ચુનેં।

150 સાનું બમિસાનું

સોને કા
સહી ભાવ
કલ ભી, આજ ભી, ઔર કલ ભી



આપકા
ફાયદા હી ફાયદા

ફેસ્ટિવલ
ઓફર

નિશ્ચિત ખરીદ પર
સુનિશ્ચિત ઉપહાર

કોઈ ભી એક

₹5 લાખ તક કી ખરીદ પર

Lunch Box | Electric Kettle
Sandwich Griller | Mixer Juicer

કોઈ ભી એક

₹5 સે 10 લાખ તક કી ખરીદ પર

Smart Phone | Led Tv (32 inch)
Washing Machine

કોઈ ભી એક

₹10 લાખ સે અધિક કી ખરીદ પર

iPhone | App Watch
iPad



● Prizes will be given depending on the amount of purchase (no clubbing) ● Item bought in the scheme
will not be eligible for exchange ● Old gold will be adjusted and will be considered. ● Big heading in all
advertisement till Diwali and this line should be included in all

"શુદ્ધતા કા પરિચય
હમારી પહ્યાન,
આપકા ભરોસા!"

ALL TYPES OF SILVER ORNAMENTS AVAILABLE

ALL DEBIT AND
CREDIT CARD ACCEPTED

We Deals in
Hallmark Jewellery

ઓફર 21 સિતમ્બર સે 31 દિસ્મબર તક

બૃજલાલ કિશનલાલ જીવેલર્સ
એન્ડ મેન્યુફેક્ચરર્સ

Giving Best Quality Since 1875

મહારાણા ચૌક, મુરાદાબાદ | મો. 9412248026

न्यूज ब्रीफ

धूमधाम से मनाया गया
संविधान दिवस

बहौदी, अमृत विचार: यज यजीय इंटर कॉनेक्ट लहरान में संविधान दिवस धूमधाम से मनाया गया। प्रधानमंत्री सीधी सिंह व अन्य शिक्षकोंने डॉ भैरव अंबेकर के विच पर पृथु अपिंत किए। वर्षपाल संघ, आयुषा, गोव, अनियामित, फौरन, कैथेप, सजना, खुशांशु, अलिया, संया ने कार्यक्रम किए। गोपाल बाबू वार्ष्ण्य, राकेश कुमार, रितिका, राजीव सिंह, राजेंद्र सिंह, श्रीकांत ने छात्र-छात्राओं को जानकारी दी। कृष्णना, रेनू, अंकित, सद्मा दुर्वेश, धर्मेश कुमार आदि सभी शिक्षक उपस्थित रहे।

नहर कटने से 40 बीघा
गहूं और आलू की
फसल जलमग्न

1978 में संभल में दंगों के दौरान हत्या कर शव कुएं में फेंक दिया था
कुएं से तीन दिन बाद निकाला गया था व्यापारी का शव

संवाददाता, संभल

अमृत विचार: संभल में दंगे के बाद नई दिल्ली के उत्तम नगर में जाकर वसे रामसरन रस्तोंगी के पौत्र कपिल रस्तोंगी ने वर्ष 1978 में हुए हिंदू-मुस्लिम दंगों के दौरान दादा रामसरन रस्तोंगी की निर्ममत के से हुई हत्या के मामले में संभल प्रशासन को प्रार्थना पत्र दिया था। बताया था कि दादा जी अपनी दुकान पर बैठे थे, दगाइयों की भीड़ ने आकर दुकान को लूटकर आग के हवाले कर दिया था और दादा रामसरन रस्तोंगी की निर्ममत रस्तोंगी के से हत्या कर उनके शव को दुकान मिला। के सामने स्थित कुएं में डाल दिया था। 3 दिन बाद उनका शव बरामद हुआ तो चाकू और कुल्हाड़ी के जख्म शरीर पर थे। पीड़ित ने बताया कि उस समय मुख्यमन्त्री रामनेश दिखने लगी।



काटा जाएगा कुएं के ऊपर खड़ा पेड़

जिस जगह पर कभी कुंआ था वहां अब पक्का चबूत्रा और उस पर पेड़ खड़ा है। बुधवार को कुएं की खोदाई का काम शुरू कराया गया तो पेड़ की जहां से काम में बधा आई। सिटी मजिस्ट्रेट ने वन विधायक के अधिकारियों को भौमि पर बुलाया तो उन्होंने बताया कि यात्री पेड़ है जिसे काटने के लिए किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। इसके बाद सिटी मजिस्ट्रेट ने गुरुवार तक पेड़ को कटवा देने के निर्देश दिये तकि काम तेज रुपातर से हो सके।

अधिकारी बोले, 1978 दंगे से जुड़ा है मामला

सिटी मजिस्ट्रेट सुधीर कुमार ने कहा कि कुएं का इतिहास बहुत पूराना है और यह 1978 दंगे से जुड़ा मामला है। डीएस-एसपी के निर्देश पर खोदाई का काम शुरू किया गया है। अस्थायी लोगों ने बताया है कि दंगे के समय एक व्यापारी की हत्या कर दगाइयों ने शव इसी कुएं में फेंका था।

परिवार ने जताई न्याय की उम्मीद

मुक्त रामसरन रस्तोंगी के भौमि सुशील रस्तोंगी ने बताया कि 1978 में दंगे के दौरान उनके ताज की निर्मम हत्या कर शव को कुएं में फेंक दिया गया था। उन्होंने कहा कि डीएस-एसपी ने उनकी शिकायत को गोपीता से लिया और कुएं की खोदाई कराकर सर बाम लाने का प्रयास शुरू किया है। अब उन्हें उम्मीद जगी है कि उनके ताज के हत्यारों की गर्भन तक भी कानून के हाथ पहुंच सकते हैं।

घटनास्थल पर डीआईजी को जानकारी देते एसपी के विशेषज्ञ। ● अमृत विचार

सिंह, तथा सीओ संभल आईएस आलोक भाटी के साथ घटनास्थल का जायजा लिया। इसके बाद थाने में पहुंचकर सीसीटीवी फुटेज देखे और अब तक की जांच को जानकारी ली। कहा कि वारदात का जल्द खुलासा कर बदमाशों को गिरफ्तार किया।

● गोपे पर पहुंचे डीआईजी, लूट के खुलासे के लिए दो दृष्ट रही पुलिस की पांच टीमें

किनारे डाल दी। पुलिस बदमाशों की तलाश में जुटी

मंगलवार शाम शराब कारोबारी के मैनेजर सौभाग्य चौधरी व राजेंद्र भाटी शराब की दुकानों से फैसा इकट्ठा कर लौट रहे थे। फिरेजपुर पुल के पास पीछे से आए दो बाइक सवार बदमाशों ने तमचा दिखाकर मोबाइल फोन और बाइक की चाची छीन ली। इसके बाद करीब 8 लाख रुपये से भरा बैग लूट लिया और बाइक व मोबाइल भी कजे में लेकर फरार हो गए। कुछ दूर लूटी गई बाइक सड़क

विशेषज्ञों द्वारा लिया गया।

स्कूटी सवार सरफा व्यापारी से बदमाशों ने रुपये लूटे

व्यापारी से जानकारी लेती पुलिस। ● अमृत विचार

बदमाशों ने रोक लिया और लात उसकी स्कूटी गिरा दी। विरोध करने पर बदमाशों ने तमचा उसकी कनपटी पर तान दिया और तमचे की बट मारकर घायल कर दिया। मढ़ी पर रह रहे बाबू शेर सुनकर पहुंचे तो बदमाशों ने उन्हें भी तमचा दिखाकर भगा दिया। इसके बाद बदमाश 30-35 हजार रुपये की नकटी लूटकर फरार हो गए। पुलिस मौके पर पहुंच गई और असपास के इलाके में चेंकिंग शुरू कराई गई। सीओ भी मौके पर पहुंचे और बदमाशों की तलाश के लिए पुलिस

बदमाशों ने रोक लिया और लात उसकी स्कूटी गिरा दी। विरोध करने पर बदमाशों ने तमचा उसकी कनपटी पर तान दिया और तमचे की बट मारकर घायल कर दिया। मढ़ी पर रह रहे बाबू शेर सुनकर पहुंचे तो बदमाशों ने उन्हें भी तमचा दिखाकर भगा दिया। इसके बाद बदमाश 30-35 हजार रुपये की नकटी लूटकर फरार हो गए। पुलिस मौके पर पहुंच गई और असपास के इलाके में चेंकिंग शुरू कराई गई। सीओ भी मौके पर पहुंचे और बदमाशों की तलाश के लिए पुलिस

बदमाशों ने रोक लिया और लात उसकी स्कूटी गिरा दी। विरोध करने पर बदमाशों ने तमचा उसकी कनपटी पर तान दिया और तमचे की बट मारकर घायल कर दिया। मढ़ी पर रह रहे बाबू शेर सुनकर पहुंचे तो बदमाशों ने उन्हें भी तमचा दिखाकर भगा दिया। इसके बाद बदमाश 30-35 हजार रुपये की नकटी लूटकर फरार हो गए। पुलिस मौके पर पहुंच गई और असपास के इलाके में चेंकिंग शुरू कराई गई। सीओ भी मौके पर पहुंचे और बदमाशों की तलाश के लिए पुलिस

बदमाशों ने रोक लिया और लात उसकी स्कूटी गिरा दी। विरोध करने पर बदमाशों ने तमचा उसकी कनपटी पर तान दिया और तमचे की बट मारकर घायल कर दिया। मढ़ी पर रह रहे बाबू शेर सुनकर पहुंचे तो बदमाशों ने उन्हें भी तमचा दिखाकर भगा दिया। इसके बाद बदमाश 30-35 हजार रुपये की नकटी लूटकर फरार हो गए। पुलिस मौके पर पहुंच गई और असपास के इलाके में चेंकिंग शुरू कराई गई। सीओ भी मौके पर पहुंचे और बदमाशों की तलाश के लिए पुलिस

बदमाशों ने रोक लिया और लात उसकी स्कूटी गिरा दी। विरोध करने पर बदमाशों ने तमचा उसकी कनपटी पर तान दिया और तमचे की बट मारकर घायल कर दिया। मढ़ी पर रह रहे बाबू शेर सुनकर पहुंचे तो बदमाशों ने उन्हें भी तमचा दिखाकर भगा दिया। इसके बाद बदमाश 30-35 हजार रुपये की नकटी लूटकर फरार हो गए। पुलिस मौके पर पहुंच गई और असपास के इलाके में चेंकिंग शुरू कराई गई। सीओ भी मौके पर पहुंचे और बदमाशों की तलाश के लिए पुलिस

बदमाशों ने रोक लिया और लात उसकी स्कूटी गिरा दी। विरोध करने पर बदमाशों ने तमचा उसकी कनपटी पर तान दिया और तमचे की बट मारकर घायल कर दिया। मढ़ी पर रह रहे बाबू शेर सुनकर पहुंचे तो बदमाशों ने उन्हें भी तमचा दिखाकर भगा दिया। इसके बाद बदमाश 30-35 हजार रुपये की नकटी लूटकर फरार हो गए। पुलिस मौके पर पहुंच गई और असपास के इलाके में चेंकिंग शुरू कराई गई। सीओ भी मौके पर पहुंचे और बदमाशों की तलाश के लिए पुलिस

बदमाशों ने रोक लिया और लात उसकी स्कूटी गिरा दी। विरोध करने पर बदमाशों ने तमचा उसकी कनपटी पर तान दिया और तमचे की बट मारकर घायल कर दिया। मढ़ी पर रह रहे बाबू शेर सुनकर पहुंचे तो बदमाशों ने उन्हें भी तमचा दिखाकर भगा दिया। इसके बाद बदमाश 30-35 हजार रुपये की नकटी लूटकर फरार हो गए। पुलिस मौके पर पहुंच गई और असपास के इलाके में चेंकिंग शुरू कराई गई। सीओ भी मौके पर पहुंचे और बदमाशों की तलाश के लिए पुलिस

बदमाशों ने रोक लिया और लात उसकी स्कूटी गिरा दी। विरोध करने पर बदमाशों ने तमचा उसकी कनपटी पर तान दिया और तमचे की बट मारकर घायल कर दिया। मढ़ी पर रह रहे बाबू शेर सुनकर पहुंचे तो बदमाशों ने उन्हें भी तमचा दिखाकर भगा दिया। इसके बाद बदमाश 30-35 हजार रुपये की नकटी लूटकर फरार हो गए। पुलिस मौके पर पहुंच गई और असपास के इलाके में चेंकिंग शुरू कराई गई। सीओ भी मौके पर पहुंचे और बदमाशों की तलाश के लिए पुलिस

बदमाशों ने रोक लिया और लात उसकी स्कूटी गिरा दी। विरोध करने पर बदमाशों ने तमचा उसकी कनपटी पर तान दिया और तमचे की बट मारकर घायल कर दिया। मढ़ी पर रह रहे बाबू शेर सुनकर पहुंचे तो बदमाशों ने उन्हें भी तमचा दिखाकर भगा दिया। इसके बाद बदमाश 30-35 हजार रुपये की नकटी लूटकर फरार हो गए। पुलिस मौके पर पहुंच गई और असपास के इलाके में चेंकिंग शुरू कराई गई। सीओ भी मौके पर पहुंचे और बदमाशों की तलाश के लिए पुलिस

बदमाशों ने रोक लिया और लात उसकी स्कूटी गिरा दी। विरोध करने पर बदमाशों ने तमचा उसकी कनपटी पर तान दिया

मेरा शहर-मेरी प्रेरणा वीरेंद्र कुमार सिंह : बरेली की योग्यतम संतान को मुख्यधारा में लाए

ब रेली शहर अपने अस्तित्व के साथ ही वाणिज्य का प्रमुख केंद्र बना रहा। सल्तनत काल के बाद मुगल आए, उन्होंने भी बड़ा व्यापारिक केंद्र होने के नाते बरेली पर फोकस रखा। अंग्रेजों ने तो प्रशासनिक व्यवस्था के संचालन के लिए बरेली को ही केंद्र बना लिया। यहां तैनात रहे तमाम अधिकारियों ने शहर के विकास पर ज्यादा जोर दिया। इन सबके बीच जिले में तैनात रहे कुछ अफसरों ने लीक से हटकर काम किया और उनकी यादें लोगों के दिलो-दिमाग पर कायम हो गई। ऐसे अफसरों की कार्यशैली की प्रशंसा करते हैं और नजीर के तौर पर पेश भी करते हैं। बरेलियंस के दिलो-दिमाग पर छाए अफसरों की फेहरिस्त लंबी है। इनमें जिन अफसरों की यादें लोगों के जेहन में लंबे समय से पैबस्त हैं, उनमें आईएएस अफसरों में दीपक सिंघल, रमारमण, नितीश कुमार, देशदीपक वर्मा, टी. वेंकटेश, वीरेंद्र कुमार सिंह, केबी अग्रवाल, संजय भूस रेण्डी, सीताराम मीणा, अनिल गर्ग, पुलिस अफसरों में सीडी कैथ, उदयन परमार, वीके मौर्य, आनंद स्वरूप, गुरु वचन लाल, पीसीएस अफसरों में बाबा हरदेव सिंह, मंजुल जोशी, दिनेश कुमार सिंह शामिल हैं। कलेकट्रेट के प्रशासनिक अधिकारी के पद से सेवानिवृत हो चुके बनवारी लाल अरोड़ा बताते हैं कि बरेली में तैनात रहे सभी पुलिस और प्रशासनिक अफसर अपनी काबिलियत में बेमिसाल थे, लोकिन कई अफसरों ने अपनी कार्यशैली के जरिये लोगों को अपना मुरीद बना लिया। यही कारण है कि लोग आज भी उन्हें बड़े ही प्यार और अदब से याद करते हैं। अमृत विचार की मेरा शहर - मेरी प्रेरणा सीरीज में कुछ खास अफसरों के बारे में सुनील सिंह की विशेष रिपोर्ट ...



યધેશ્વરાનુભૂતિની જરૂરિયાની બાબત કાનૂની વિધેયક માહીલે



कथावाचक नाट्य उत्सव का आयोजन किया गया। इसमें पंडित जी के नाटकों का मंचन किया गया। शहर के गणमान्य लोग, प्रबुद्ध जन और आम लोग पहुंचे। कार्यक्रम के बाद से पंडित जी के लेखन को लेकर शहर में सकारात्मक माहौल बना। वह बताते हैं कि उनके कार्यकाल में दो बार आयोजन हुआ। उनके जाने के बाद शहर के लोगों इस आयोजन की कमान संभाल ली। तीसरा आयोजन फ्यूचर यूनिवर्सिटी में किया गया। इस आयोजन में वह लखनऊ से आकर शामिल हुए थे। शहर के वरिष्ठ पत्रकार रणजीत पांचाले समेत अन्य लोग आयोजन की कमान संभाले हुए हैं। रणजीत पांचाल बताते हैं कि पिछले दो सालों से इस आयोजन का स्वरूप थोड़ा बदल गया है। अब उनके नाटकों के मंचन से ज्यादा बौद्धिक पक्ष पर चर्चा पर फोकस किया जाता है। हालांकि उनके नाटकों का मंचन भी जारी है। अभी कुछ समय पहले उनकी पुण्यतिथि पर शहर में आयोजित नाट्य महोत्सव में राधेश्याम कथावाचक के नाटकों का मंचन किया गया है। उन्होंने प्रेमचंद के कहानियों पर आधारित नाट्य उत्सव का आयोजन कराया था।



जिला लाइब्रेरी में स्थानीय रचनाकारों की बनवाई दीर्घा

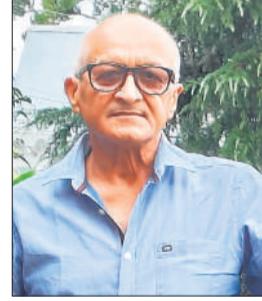
बकालै धोरेंद्र कुमार सिंह राधेश्याम कथावाचक के नाटकों का आकर्षण महान उपन्यासकार प्रेमचंद के उपन्यास गबन को पढ़कर समझा जा सकता है । गबन उपन्यास का नायक गबन करने के बाद पुलिस की गिरफ्त से बचने के लिए कलकत्ता में जाकर छिप जाता है । अपनी फरारी के दौरान उसे पता चलता है कि कलकत्ता शहर में राधेश्याम कथावाचक के नाटक का मंचन होने जा रहा है । यह जानते हुए कि पुलिस उसका गिरफ्तारी के लिए प्रयासरत है, लेकिन उपन्यास का नायक अपने छिपे हुए स्थान से बाहर निकल कर नाटक देखने के लिए पहुंच जाता है रणजीत पांचाले कहते हैं कि वीरेंद्र कुमार सिंह का योगदान यहीं नहीं रुक जाता है । उन्होंने इस शहर के प्रमुख साहित्यकारों प्रख्यात शायर वसीम बरेली से लेकर प्रबुद्ध आलोचक मधुरेश तक की रचनाओं को संकलित कराकर राजकीय पुस्तकाल में अलग दीर्घी बनवाई थी । इस दीर्घी में बरेली के सभी साहित्यकारों की रचनाओं का स्थान दिया गया था । जिला जेल में प्रेमचंद का साहित्य रखवाया गया था ।

एलेक्जेंटर इज्जत : पहाड़ पर ट्रेन घालकर इज्जत
गंगर के रूप में शहर का हिल्सा हो गए



इज्जत स्टेशन से
रेलवे डिवीजन
बनने की कहानी
बरेली स्थित इज्जत नगर रेल

मंजुल जोशी : बवालियों को नाम
से छुलाकर कर देते थे शर्मशार



‘मैंने काफी समय पहले एक फिल्म देखी थी, फिल्म का नाम तो नहीं याद आ रहा है, लेकिन उसके विलेन का एक बहुत चर्चित डॉयलाग था, वह आज भी याद है। फिल्म में डॉयलाग था कि इस शहर की ऐसी कोई हूर नहीं जिसे वह जानता नहीं, उसी तरह बरेली शहर के बारे में मरा अनुभव है। बरेली शहर की ऐसी कोई गली नहीं और वहां रहने वाला चाहे नोटोरियस हो या फिर प्रबुध नागरिक, सभी को वह जानते हैं। इनमें से बहुत सारे लोगों से आज भी संपर्क है और त्योहारों तथा खास मौकों पर शुभकामनाओं का आदान-प्रदान भी होता है।

सांप्रदायिक रूप से संवेदनशील हो चले बरेली शहर में लंबे समय तक या यूं कहें कि रिकॉर्ड समय तक एडीएम सिटी रहने वाले मंजुल कुमार जोशी शहर के लोगों के दिलों में आज भी बसते हैं। सिटी मजिस्ट्रेट फिर एडीएम सिटी के दो कार्यकाल पूरे करने वाले मंजुल कुमार जोशी उत्तराखण्ड राज्य बनने पर वहां भेज दिए गए थे। उत्तराखण्ड में आईएस कैडर से सेवानिवृत्त होने वाले मंजुल कुमार जोशी इन दिनों हल्द्वानी में रहते हैं, लेकिन बरेली लगातार उनके दिलों में बसता है। मंजुल कुमार जोशी की खासियत यह रही है कि वह बरेली शहर के चर्चे-चर्चे से ही वाकिफ नहीं थे, बल्कि यह रहने वाले लोगों को भी व्यक्तिगत रूप से जुड़े हुए थे। बरेली शुरू से ही संवेदनशील शहर था और आए दिन दोनों समुदायों के लोग आमने-सामने आ जाते थे, लेकिन जब मंजुल जोशी उनके बीच में आ जाते तो दो दोनों पक्ष शांत हो जाते थे, क्योंकि आमने-सामने खड़े अधिकांश लोग उनके अजीज हुआ करते थे। ऐसे में उन लोगों की तनी हुई हुई भौंहें अपने आप झुक जाया करती थीं। मंजुल जोशी बरेली में 1982 से 1984 तक एसडीएम, फिर 1990 से 1995 तक सिटी मजिस्ट्रेट और एडीएम सिटी के रूप में तैनात रहे। बाद में दो साल के लिए नैनीताल स्थित प्रशासनिक अकादमी में तैनात रहे और वर्ष 1997 में फिर एडीएम सिटी के पद पर नियुक्त किए गए। बाद में कुछ समय के लिए अपर आयुक्त के पद भी तैनात रहे। वर्ष 2001 में अलग उत्तराखण्ड राज्य बनने पर

बरेली बहुत हसीन जगह थी और यहां का सहजीवन लाजवाब था। जैसे पूरे देश का सहजीवन बिखर रहा है, उसी तरह बरेली में भी दरारें खिंचती जा रही हैं। पहले ऐसा नहीं था। सत्ता में भागीदारी और आर्थिक साधनों को लेकर टकराव तो अवश्य होते थे, लेकिन दिलों की दूरियां कम नहीं होती थीं। बरेली में पहली बार बाबरी मस्जिद विध्वंस के समय जो बवाल हुआ उसमें कई लोगों की जाने गई। हालात इतने बिगड़ गए कि प्रशासन के हाथ से निकल गए और शासन के निर्देश पर स्थिति को नियंत्रित करने के लिए सेना बुलानी पड़ी। धीरे-धीरे माहौल शांत हुआ, जीवन पटरी पर लौटने लगा, लेकिन दिलों में खाई चौड़ी हो गई। बाद में वर्ष 1995 में विहारी पुर मोहल्ले से एक जुलूस निकाला गया और सिविल लाइन्स में हनुमान मंदिर के सामने नमाज अदा किए जाने से बवाल भड़क उठा। उन लोगों ने संभालने के लिए बहुत प्रयास किए। अगले दिन तत्कालीन मुख्यमंत्री मायावती का बरेली दौरा प्रस्तावित था। यह माहौल खराब करने की जान-बूझकर कोशिश की गई थी। हालात नियंत्रित

और पूरे प्रशासनिक अमले का ट्रांसफर कर दिया गया। हालांकि दो साल बाद पुनः एडीएम सिटी के पद पर तैनाती मिल गई, लेकिन शहर की फिजां काफी बदल चुकी थीं। लोग उनकी बात तब भी सुनते थे, लेकिन अदब-लिहाज तो कम हुआ था।

वह कहते हैं कि बरेली की बसावट ऐसी है कि बिना सह-जीवन के अस्तित्व ही नहीं बचेगा। प्रशासनिक अफसरों को इसे समझना होगा। इसके लिए उन्हें बरेली की गलियों में जाकर देखना होगा। सामाजिक ताने-बाने को समझना होगा। वहां के लोगों से राब्ता कामय करना होगा। उनके सुख-दुख में शरीक होना होगा। वह कहते हैं कि उम्मीद अभी कायम है। शहर में कई इंस्टीट्यूशन ऐसे हैं जो अभी भी समाज को जोड़े रखने की कोशिशों में जुड़े हुए हैं। वह कमजोर अवश्य हुए हैं, लेकिन पूरी तरह से खारिज नहीं हुए हैं, इससे एक उम्मीद अवश्य जगती है। अंत में वह कहते हैं-

न हात दख़कर शहर म कफ्यू लगाना पड़ा हाक ...
भरोसे पर किसी के जब भी ठोकर खाई होती है,
जो दूसरे के जब भी ठोकर खाई होती है

टर क्लटर बक तत्कालीन युक्त प्रांत में अपनी तैनाती दौरान वनों को संरक्षित करने के लिए उन्हें आर्थिक रूप से जोड़ने का मानना था कि जब तक वनों को बोपज धनोपार्जन का जरिया नहीं किया जा सके तब तक वनीय लोगों को वनों के विरुद्ध विरुद्ध रूप से मददगार रूप से जोड़ने के रोजगार का जरिया बनाना चाहिए द जरूरी है। इसी उद्देश्य पर वे ने अपने बरेली जनपद में 1912 एक यूटिलाइजेशन सकिया था। पहले इस इलाके वाले अपुर अटरिया के नाम से जाना जाता था। बाद में इसे सर पीटर रामान में क्लटर बक गंज कहा गया। स्थानीय लोगों व न पर अंग्रेजी नाम चढ़ने का बहुत दे रहा था, इसलिए धीरे इसका नाम कलकटरबक गंज बन लिया गया। यह आज भी एक औद्योगिक क्षेत्र के रूप में विलंब हो गया।



एफआरआई देहरादून मैं वलटर बक्क के नाम पर रसायनिक



<p>जग भी अंग्रेजी कंपनी के टेकेदार भारतीय मजदूरों से जंगल से लीजा इकट्ठा करते थे और कंपनी को आपूर्ति करते थे। इसके कुछ समय बाद 1937 में वेस्टर्न इंडियन मैच कंपनी (WIMCO) स्थापित हुई। यहां पर कैफर फैक्ट्री की भी स्थापना की गई। इन उद्योगों के जरिये कलटर बक गंज की पहचान प्रमुख और वहां और वना से सास पके बाद गंज के रूप में होने लगी। बड़े उद्योग धंधे स्थापित हुए तो आवागमन बढ़ा, इसलिए कलटर बक गंज के नाम पर मुरादाबाद-</p>	<p>लखनऊ रेल रूट पर रेलवे स्टेशन स्थापित किया गया।</p>	<p>है कि जगलों के सरक्षण और उन्हें विस्तार देने के लिए किए गए प्रयासों के लिए कलटर बक इससे ज्यादा सम्मान के पात्र थे, लेकिन कलटर बक गंज के रूप में वह हमेशा हमारे बीच जीवित रहेंगे।</p>
---	---	---

A photograph showing a man in a light blue t-shirt and dark pants walking away from the camera on a paved path. To his left is a large, leafy tree. In the background, there's a building with a red roof and some other trees. The overall scene suggests a park or a campus setting.

तारपीन और राल (आईटीआर कारखाने ने अप्रैल 1998 में उत्पादन बंद कर दिया और कभी देश भर में माचिस की आपूर्ति करने वाली विमको फैक्ट्री 2014 में बंद हो गई। हालांकि क्लिटर बब्ब गंज से ही सटे परसाखेड़ा में कन्फूज औद्योगिक इकाइयां स्थापित हो रही हैं।

गुरुवार, 27 नवंबर 2025

हवा की दवा करें

धरती पर सबसे जहरीली हवा हमारी राजधानी की है। यह न केवल देश की, बल्कि वायु प्रदूषण की वैश्विक राजधानी बन गई है। इसका वायु प्रदूषण स्तर विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानक से 20 गुना होना दर्शाता है जिसके बलागम है। हर साल अक्टूबर से फरवरी तक राजधानी की जहरीली हवा पर खबरों का तकरीबन रोजाना रिपोर्ट होना इस बात का प्रमाण है कि इस स्थिति के प्रति हम महज बयानबाजी और खानपूरी तक संतुष्ट नहीं हैं। समस्या के समूल समाधान के प्रति हमारी व्यवस्था में व्यापक अकर्मण्यता और पर्याप्त उदासीनता व्याप्त है। इसका सबूत है कि डब्ल्यूचॉप्स ने जब 2016 में दुनिया के सबसे 15 प्रदूषित शहरों की सूची जारी की, तो दिल्ली अंत्य थी। आज 2025 में यहां लालत करोगे वही हैं।

आज सर्वाधिक वायु प्रदूषण वाले 183 देशों में हमारा स्थान 177वां है। यह धारणा बलवती है कि दिल्ली या बड़े औद्योगिक शहरों की हवा ही जहरीली है और बाकी जगते हैं अपेक्षाकृत दुरुस्त है, पर ऐसा नहीं है। बरेली, मुरादाबाद, लखनऊ, अयोध्या जैसे तमाम शहरों के लोग वायु गुणवत्ता सुचकांक के 200 के आसपास की हवा में जी रहे हैं, जो बहुत अस्वास्थ्यकर है। वे यह सोच भी नहीं सकते कि कभी वायु प्रदूषण से ग्रस्त नावें के ओस्लो का औसत एक्यूआई 1-2 तक, औटो इंडस्ट्री के चलते कभी कुछतां डेंड्रोइट का 8 और भारी वाहन यातायात व औद्योगिक गतिविधियों के लिए जाना जाने वाला अल्जीयस का 11 भी हो सकता है। सरकार हो या समाज, यह लापरवाही आस्थाती है। इसके पहले कि वातावरण दमधोंद हो जाए और सबा कपल हल्ले के बीचिंग, होईंग, और तितानिन जैसे शहरों की भर अस्पतालों के बेड वायु प्रदूषण प्रभावितों से भर जाएं, लोग कैन या पाठच में अपनी साफ हवा लेकर चले और खास तरह के मास्क व पॉटेंबल ऑस्लीजन कैन जैसे उत्पादों वाला 'प्रूपूण बाजार' लोगों को बेजार करे, हमें इस समस्या का स्थायी हल खोजना होगा। तय है कि पानी की छड़िकाकाव, कृत्रिम बारिश या कुछ समय के लिए वाहनों पर रोक जैसे अस्थायी समाधान इस जहरीली हवा की अक्सर दवा नहीं बन सकते। हमें दीर्घकालिक, संरचनात्मक उपाय करने होंगे।

बहुत से देशों और शहरों ने अपने वायु गुणवत्ता सूचकांक को सेकड़ों से सतह प्रयावरों के जरिए दहाई तक ला दिया। क्या हमें उनसे सीख लेकर वैसे ही उपाय अपनाने चाहिए? या अपनी व्यवस्था, समाज और मिजाज के अनुरूप समाधान तलाजना होंगे? यूरोपीय देशों या शहरों की बजाय हमारे लिए चीन के अधिक उपयुक्त मांडल लगता है, क्योंकि उन्होंने के लिए विकास और शहरीकरण वायु प्रदूषण के समान कारक हैं। उसने दीर्घ अवधि की नीतियों और त्वरित क्रियाओं का संयोजन लाया किया है। चीन ने इस बाबत सहयोग की पेशकश भी रखी है। संभव है सरकार सीमा विवाद को परे रख इस मालामाल में सहयोग की पहल करे। कुछ भी हो वर्तमान में जब सांस दर सांस भारी होती जा रही है, ऐसे में ऐसी भयावह स्थिति में सबसे ज़रूरी है कि साफ हवा के लिए जन-जागरूकता बढ़े और सरकार वोट का मुद्दा न होने के बावजूद इससे निवटने का पूरी ईमानदारी से स्थायी प्रयास करे।

प्रसंगवाच

यूपी-बिहार से लौट रहे श्रमिकों का संकट

दिवाली, छठ पूजा और बिहार चूनाव हो जाने के बाद यूपी-बिहार के लाखों प्रवासी श्रमिक अब सूरत, मुंबई, उदयपुर, चित्तौड़गढ़ और देश के अन्य औद्योगिक शहरों की ओर लौट रहे हैं, लेकिन वापसी की यह यात्रा उनके लिए पहले से अधिक कष्टदायक, महंगी और जोखिम भी साबित हो रही है। रेल प्रशासन द्वारा पर्याप्त विशेष ट्रेनों की व्यवस्था न किए जाने, बस ऑपरेटरों द्वारा मनमाना किया रखने वाले और जनरल कोचों में भयावह भीड़ जैसी समस्याओं ने मनदरों की मुश्किलें कई गुना बढ़ा दी है। यह स्थिति केवल यात्रियों की परेशानी नहीं, बल्कि उन औद्योगिक क्षेत्रों के लिए भी गंभीर चुनौती है, जिनकी अर्थव्यवस्था यूपी-बिहार के श्रमिकों पर निर्भर है। खासकर सूरत का टेक्स्ट्राइल सेक्टर।

उत्पन्न की उमंग के बाद लौटने का संघर्ष है। दिवाली और छठ बिहार-यूपी के लिए सबसे बड़े सामाजिक, धार्मिक पर्व माने जाते हैं। इन दिनों प्रवासी श्रमिक अपने परिवारों के बीच रहना चाहते हैं, इसलिए लाखों की संख्या में लोग वापस अपने गांव, कस्बों की ओर जाते हैं। त्योहार और चूनाव खत्म होते ही जब वे रोजगार के लिए लौटना चाहते हैं, तो उन्हें सभी पहले जैसे समस्या का सामना करना पड़ता है, वह ही कन्फर्म टिकट का संकट। सूरत, अहमदाबाद, मुंबई, दिल्ली, गजस्थान सहित देश के प्रमुख औद्योगिक शहरों से यूपी-बिहार आने वाली लागड़ा सभी ट्रेनों में वेटिंग लिस्ट लंबी है।

इधर से जाने वाली तकरीबन सभी ट्रेनों में एक भी कन्फर्म सीट भिलाना लगभग नामुमकिन हो चुका है। स्थिति यह है कि त्योहार वाले सप्ताह में भर गई वेटिंग अब भी कम होने का नाम नहीं ले रही। कन्फर्म टिकट का लिए निवटने के लिए लौटने का संघर्ष है। दिवाली और छठ विहार की लिए परिवारों के लिए सबसे बड़ा सामाजिक धार्मिक पर्व माने जाते हैं। इन दिनों प्रवासी श्रमिक अपने परिवारों के बीच रहना चाहते हैं, इसलिए लाखों की संख्या में लोग वापस अपने गांव, कस्बों की ओर जाते हैं। त्योहार और चूनाव खत्म होते ही जब वे रोजगार के लिए लौटना चाहते हैं, तो उन्हें सभी पहले जैसे समस्या का सामना करना पड़ता है, वह ही कन्फर्म टिकट का संकट।

बस ऑपरेटरों की मनमानी की वजह से कियाया दाई से तीन गुना बढ़ा दिया गया है। जब ट्रेन में जग ह नहीं मिलती, तो श्रमिकों के पास बस का विकल्प बचता है, लेकिन बस ऑपरेटर स्थिति का फायदा उठाकर यात्रियों से मनमाना किया रखा वसूल रहे हैं। बिहार-यूपी से सूरत का कियाया सामान्य दिनों में 1800-2200 रुपये होता है। मौजूदा स्थिति में वसूला जा रहा किया 5000 रुपये तक है। कियाया में न भोजन मिलता है न आराम और कई बार तो असुरक्षित व अवैध बसों में यात्रा करनी पड़ती है। यहांकी मजदूरों के लिए खर्च बहुत भारी पड़ता है। यो लोग त्योहार के दौरान अपनी ज्याम-पूंजी खर्च करके होते हैं, वे लौटते समय कर्ज लेने को मजबूर हो जाते हैं।

बाधित यात्रा का सबसे बड़ा असर सूरत की टेक्स्ट्राइल इंडस्ट्री पर पड़ता है। सूरत, जो देश का सबसे बड़ा सिंथेटिक टेक्स्ट्राइल हवा है, उसकी रीढ़ यूपी-बिहार के ही श्रमिक है। पावरलूम, डाइंग, प्रिंटिंग, एब्रोयडरी और फिनिशिंग यूनिट्स में काम करने वाले 60-70% मजदूर इन्हीं राज्यों से आते हैं। त्योहार के बाद आधी मशीनें बंद होती हैं। मजदूर नहीं लौटने से उत्पादन घट रहा है।



आलोचना और स्वतंत्र सोच, क्रांतिकारी के दो अनिवार्य गुण हैं।

-शहीद आजम भगत सिंह

मारतीयों की सम्यता और सोच के संदर्भ



अनिल यादव
वरिष्ठ पत्रकार



यूरोप व अमेरिका से जब नस्लीय भेदभाव और हिंसा की खबरें आती हैं, तो हम हिंदुस्तानी जाहिर करते हैं, जैसे इन देशों ने आर्थिक तरकीब भले के लिए लौटी हो, लेकिन वास्तव में उनका सभ्य होना अभी बाकी कारण उसके लंबां की व्यवस्था भी बाकी खिलाड़ियों से अलग होती जा जाती थी। बांगला है। इस तरह की धाराणा से अधिकारी ने यह भेदभाव देखा तो पी बालू को अपने यहां ले गए। पी बालू पहले डॉ. भीमराव आंबेडकर के देखाव तो वे बालू को अपने यहां ले गए।

अभी सिर्फ नौ साल पहले 2016 में 11 में से छह अस्वेत खिलाड़ियों को अप्रीको क्रिकेट टीम में शामिल करना अनिवार्य किया गया। इन छह में से भी कम से कम दो दिनों तक विदेश के राजा ने यह भेदभाव देखा है।

यह आरक्षण है जिसके तहत दो स्थान अफ्रीका के मूल निवासियों के लिए निश्चित हैं। इस नई व्यवस्था के समय कहा गया था कि इससे प्रतिभासाली खिलाड़ी टीम से बालू को बाहर हो जाएगी।

इस नस्लीय श्रेष्ठता का एक तीसरा रूप पर भार भी है, जिसके तहत भारतीय अफ्रीकी क्रिकेट में फिल्डर हो जाएगा। ऐसा कुछ नहीं हुआ, बल्कि अफ्रीकी ट्रैक्स के खिलाड़ी जीवन में बहुत बदल देती है। उन्होंने अफ्रीकी टीम के कप्तान टेब बेवुमा को 'बैनौ' कहा था, जिसे एक नए योग्य ट्रैक्स के लिए बालू को बाहर होना चाहिए। अपराधी और अंदर के लिए बालू को बाहर होना चाहिए। और यह अपराधी के लिए बालू को बाहर होना चाहिए।

भारत नस्लीय श्रेष्ठता के लिए बालू को बाहर होना चाहिए। अपराधी के लिए बालू को बाहर होना चाहिए। और यह अपराधी के लिए बालू को बाहर होना चाहिए। और यह अपराधी के लिए बालू को बाहर होना चाहिए। और यह अपराधी के लिए बालू को बाहर होना चाहिए।

यह आरक्षण है जिसके तहत दो स्थान अफ्रीका के मूल निवासियों के लिए निश्चित हैं। इस नई व्यवस्था के समय कहा गया था कि इससे प्रतिभासाली खिलाड़ी टीम से बालू को बाहर हो जाएगी।

यह आरक्षण है जिसके तहत दो स्थान अफ्रीका के मूल निवासियों के लिए निश्चित हैं। इस नई व्यवस्था के समय कहा गया था कि इससे प्रतिभासाली खिलाड़ी टीम से बालू को बाहर हो जाएगी।

यह आरक्षण है जिसके तहत दो स्थान अफ्री

शिं

क्षा के पवित्र क्षेत्र में पिछले कुछ समय में एक विचित्र प्रवृत्ति उभर आई है। देश-विदेश की तमाम तथाकथित संस्थाएं

रूपये लेकर लोगों को 'डॉ.' बना रही हैं, जो

उपाधि कभी उपलब्धि का प्रतीक थी, अब दिखावे और प्रचार का माध्यम बन गई है।

ऑनरेटी (मानद डॉक्टरेट), जिसका उद्देश्य असाधारण योगदान देने वाले व्यक्तियों को सम्मानित करना था, अब पैसों के लेन-देन का औजार बन गई है। इंटरनेट पर ऐसे प्रमाणपत्र आसानी से उपलब्ध हैं- बस भुगतान कीजिए, एक 'ज्लोबल समिट'

में मंच पर फोटो खिंचवाइए और नाम के आगे 'डॉ. (Dr.)' जोड़ लीजिए, जो कभी उपलब्धि का प्रतीक था, अब प्रदर्शन का औजार बन गया है।

ऑनरेटी डॉक्टरेट या मानद उपाधि का मूल विचार बहुत ही गरिमामय था। इसका उद्देश्य उन व्यक्तियों

को सम्मानित करना था, जिन्होंने समाज, विज्ञान, साहित्य, कला या मानवता के क्षेत्र में असाधारण

योगदान दिया है। परिस्थिति में ऑक्सफोर्ड, हावर्ड या कैंब्रिज जैसे विश्वविद्यालय जब ऐसी उपाधियां देते हैं, तो यह स्पष्ट कर देते हैं कि यह शैक्षणिक डिग्री नहीं, बल्कि प्रतीकात्मक सम्मान है। भारत में भी कुछ

प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय यह परंपरा निभाते हैं। उद्देश्य केवल सम्मान देना है, न कि 'डॉक्टर' कहलाना

का अधिकार प्रदान करना।

डॉ. शिवम भारद्वाज
असिस्टेंट प्रोफेसर, मध्यवर्ती

मानद उपाधियां घटता सम्मान-बढ़ता व्यापार

यह प्रवृत्ति केवल शिक्षा की साथ नहीं गिरा रही, बल्कि समाज में ज्ञान की विश्वसनीयता भी तोड़ रही है। जब कोई व्यक्ति अपनी सोशल मीडिया बारों में 'Dr.' जोड़ रहा है, तो लोग उसे विशेषज्ञ मान रहे हैं याद वह वह असल में किसी विषय का प्राथमिक ज्ञान भी न रखता है। ऐसे लोग अक्सर 'लाइफ कॉच', 'मोटिवेशनल स्पीकर' या 'ज्लोबल एंबेस्डर' के रूप में सामने आते हैं और ऑनरेटी डॉक्टरेट का अपनी योग्यता का प्रमाण बता रहे हैं। यह समाज में ब्रामक प्रतिष्ठा और ज्ञान अधिकार का भ्रम पैदा करता है। यह आरण केवल ब्रामक नहीं, बल्कि यदि ज्ञानविद्यालय करने या व्यक्तिगत लाभ के लिए किया जाए, तो कानून धोखाधारी की श्रीमी में भी आ सकता है। इससे भी अधिक गंभीर बात यह है कि यह सच्चे शोधकर्ताओं और विद्वानों की मेहनत का अनादर है, जिनका गिरावंश और इमानदारी दोनों पर बधाई है। यह भी सच है कि दोस्त केवल इन संस्थाओं का नहीं, उनकी ही बड़ी जिम्मेदारी उस मौन स्वीकृति की है, जो समाज देता है। मंचों पर ऐसे लोगों को 'डॉ.' कहकर बुलाया जाता है, उनसे सम्मानित किया जाता है, यूजीसी में उनके 'अंतर्राष्ट्रीय सम्मान' की खबर छपती हैं। जानियों की वह मुँह नकली उपाधियों के बैंधन देती है। धीरे-धीरे असली और नकली के बीच की रेखा मिटने लगती है।

इस प्रवृत्ति पर सख्ती जरूरी

यूजीसी समय-समय पर फर्जी विश्वविद्यालयों और अवैध उपाधियां बांटने वाली संस्थाओं की सूची जारी करता है, परंतु फिर भी बड़ी संख्या में लोग इनके जाल में फंस रहे हैं। विदेशी नामों, अंग्रेजी आधा और तथाकथित 'ज्लोबल' पहचान का आकर्षण हमारे समाज की उस मानसिकता को भी उतार गरिया रहा है। यह सच है कि दोस्त केवल इन संस्थाओं का नहीं, उनकी ही बड़ी जिम्मेदारी उस मौन स्वीकृति की है, जो समाज देता है। मंचों पर ऐसे लोगों को 'डॉ.' कहकर बुलाया जाता है, उनसे सम्मानित किया जाता है, यूजीसी में उनके 'अंतर्राष्ट्रीय सम्मान' की खबर छपती हैं। जानियों की वह मुँह नकली उपाधियों के बैंधन देती है। धीरे-धीरे असली और नकली के बीच की रेखा मिटने लगती है। जब यह खरीदी जाती है, तो 'सम्मान' शब्द अपनी गरिमा खो देता है और शिक्षा, जो समाज की आत्मा है- सिर्फ दिखावे का मुखौटा बन जाता है। शिक्षा का सार ज्ञान है और ज्ञान का सार ईमानदारी, जब उपाधियां बिकने लगती हैं, तो शिक्षा का अर्थ ही खो जाता है। मानद डॉक्टरेट का वास्तविक सौदाएँ उसकी विनम्रता में है। सम्मान देने और पाने, दोनों की मर्यादा में। यह परंपरा तभी जीवित रह सकती है, जब इसे दिखावे, प्रचार और पैसों की पहुंच से बचाया जाए। डॉक्टरेट की उपाधि का मूल उसकी कठिनाई और त्राम में है। उसे खरीदा नहीं जा सकता, केवल अंतिम किया जा सकता है। इसलिए किसी नाम के आगे 'डॉ.' देखकर अधिविश्वास न करें, बल्कि यह जानें कि उपाधि कहां से और किस अधिकार पर प्राप्त की गई है। यही समझ जब समाज में फिर से स्थापित होगी, तब 'सम्मान' अपनी खाई हुई ऊंचाई पर लौट आएगा।



भानक प्रतिष्ठा

कैंपस में पहलानिंदा आई एक-दूसरे को जानने की शुरुआत करें...

स्कूल के दिनों से ही हम सब कॉलेज लाइफ की चमकदार कहानियां सुनते आते हैं। कॉलेज में कोई नहीं रोके गा, वहां असली आजादी मिलेगी, यूनिफॉर्म नहीं, नए दोस्त, नए सपने, नए अनुभवित हीं खाली को अपने दिल में सजाए, मैं 16 अगस्त 2019 की सुबह इनरेटिस के गेट के समाने खड़ी थी। थोड़ी देर से एडमिशन लेने की बजाए से यह दिन और भी खास था, जैसे मेरी खुद की कहानी अब शुरू हो रही है। कॉलेज के पहले दृश्य ने दिल जीत लिया। जब मेरी नजर उस बड़े खुबसूरत कैप्स पर पड़ी, तो आंखें खुद-ब-खुद बड़ी हो गईं। वो चौड़ा गेट, ऊंची-ऊंची इमारतें, चारों ओर हरियाली, छात्रों की भीड़, हंसी की आवाजें, लौंग में बैठे स्टूडेंट्स, हर तरफ नई ऊंची की गंभीर थी। सब कुछ फिल्मी था, जैसे किसी फिल्म का सेट हो और मैं उस कहानी की नई किरदार। पर इतना असली कि उस पल मेरी धड़ियों नेतेरें तेज हो गईं। दिल में अचानक एक उम्मीद जग गई कि हां! यही है, वो जगह जहां मेरा सपना जी उड़ेगा।

कैंपसरूम में कदम रखते ही एक अलग माहाल महसूस हुआ। सभी स्टूडेंट्स का कैपड़ा के बारे में, हंसी से भरा माहाल, थोड़ी-सी घबराहट, पर उससे कहीं ज्यादा उत्साह में बैठे थे। हर चेहरा जैसे एक नई कहानी लेकर आया था। कोई नए जूते दिखा रहा था, कोई अपनी जगह ढूँढ़ रहा था, कोई किसी से बस यूं ही बात शुरू कर रहा था और पिर मेरी नजर समाने खड़े एक व्यक्ति पर पड़ी, पहले तो लागा कोई सेनियर होंगे, लेकिन कुछ ही क्षणों बाद पता चला कि वो हाथारे HOD हैं। HOD हाथारे भी इतने कूल कि लगा जैसे कॉलेज की किटाबें नहीं, जिंदगी खुद हमें पढ़ाने आई हैं।

कैंपसरूम में कदम रखते ही एक अलग माहाल महसूस हुआ। सभी

पहले ही दिन HOD सर ने कहा, "Books later Let's start by knowing each other." फिर शुरू हुई एक-एक करके introductions की बारिश, किसी ने कहा उसे singing पढ़ रहा है, किसी ने बताया कि वो शहर पहली बार छोड़कर आया है, किसी ने अपने भविष्य के सपने सुनाए और इन छोटी-छोटी बातों ने हम सको के एक-दूसरे के करीब लाए। उनका पढ़ाने का तीक्ष्ण सम्बन्ध अलग, दिन की शुरुआत ice-breaking session से करते थे, कहानियों के जरिये पढ़ाते, practicals से सम्बन्धित और अपने अनुभवों के सफारे हमारे सपनों में इड़ान भर देते। हमेशा सुनती थी कि कॉलेज में कोई नहीं रोके गा।

पहले दिन ही सम्मान आ गया कि वो ऐसा क्यों कहते हैं। यहां कोई सख्त अनुशासन नहीं, कोई यूनिफॉर्म नहीं, कोई डर नहीं क्योंकि कॉलेज में सिर्फ मिली सब कुछ सीखने और खुद को पहचानने की पूरी आजादी। कॉलेज की पहली ही अलतूरी, खुली, आजादी और उम्मीदें से भरी। कॉलेज के बीच-बीच में हम सभी एक-दूसरे के करीब लाए। कॉलेज की बैठने से आया है, किसके बारे में अपने दोस्तों से आया है, हर बातचीत से एक नया रिश्ता बनता चला गया। कब मैं अपने पहले गुप्त का हिस्सा बन गईं, ये मुझे खुद भी नहीं पता चला। कॉलेज का जादू यही है। यहां हर कोई एक-दूसरे से बात करता है, रिश्ते खुद-ब-खुद बन जाते हैं, और अजनबी दोस्त बन जाते हैं। उस दिन की हंसी, वां नए चेहरे, वो अनजाना सा अपनापन, सबने मिलकर मेरे पहले दिन को "यादगार" और "दिल के करीब" बना दिया।

-निकिता चौधरी, बरेली

नोटिस बोर्ड

■ लखनऊ विश्वविद्यालय में छात्रों के लिए विप्रो, हाइक एप्युकेशन और अकाश एजुकेशनल सार्विसेज लिमिटेड द्वारा लोगोंसेट सेल के एडिशनल डायरेक्टर डॉ. हिमांशु पाठेय ने बताया कि बीसीए, बीबीए, बीकॉम, बीए, बीएसएम व बीएससी के छात्र कारस्टर मार्किंग रिप्रेटेटिव पद पर 3.08 लाख रुपये वार्षिक पैकेज हेतु अवेदन कर सकते हैं। यह प्रक्रिया में प्री-लोगोंसेट टाइप, एवं अपराधिक तथा वॉयस एवं एक्सेंट राइट शामिल हैं। तीनों कंपनियों में अवेदन की अंतिम तिथि 29 नवंबर 2025 निर्धारित की गई है।

■ आईआईटी नाम पर अपाले सप्ताह 40 अर्थात् 1 दिसंबर से लोगोंसेट अभियान शुरू होने जा रहा है। इस अभियान 15 दिसंबर तक चलेगा। इस बारे के अभियान में देश-विदेश की लगभग 250 कंपनियों शामिल हो सकती हैं।

फ्रीलांसिंग से बनाए मजबूत करियर

आज के डिजिटल दौर में

हांगकांग में भीषण आग...



हांगकांग के तर्फ पो जिले में एक बहुमंजिला आवासीय परिसर में बुधवार को आग लगने से चार लोगों की मौत हो गई जबकि तीन अन्य विवित अस्पताल में भर्ती हैं। इमरतों में कुछ लोगों के फर्से होने की सूचना है।

वर्ल्ड ब्रीफ

40 अरब डॉलर के हथियार लेगा ताइवान
ताइवान के रक्षा मंत्री वैलिंगटन कुने बुधवार को कहा कि उनकी सरकार हथियारों की खरीद के लिए 40 अरब अमेरिकी डॉलर का विशेष बजट प्रपोज करेगी। यह नियंत्रण ताइवान पर अपने रक्षा खर्च में बढ़ोरी करने के अमेरिका के दबाव के बीच विद्या जा रहा है। कुने बाब्यो कि यह बजट नहीं रक्षा प्रणालीयों की खरीद पर खर्च किया जाएगा, जिनमें अमेरिका से खरीदे जाने वाले सेव्य उपकरण भी शामिल होंगे।

बोल्सोनारो की 27 साल की सजा शुरू
ब्राजीलिया। ब्राजील के पूर्व राष्ट्रपति जेयर बोल्सोनारो ने मंगलवार से 27 साल की जेल की सजा काटना शुरू कर दिया। बोल्सोनारो को 2024 का राष्ट्रपति चुनाव हासिल के बाद सत्ता में बने रहने के लिए तज्ज्ञापत्रक की साजिश का दोषी पाया गया था। इस मामले पर सुनवाई कर रहे उत्तम न्यायालय के न्यायाधीश एलकान्ड्रे दे मोरेस ने आदेश दिया कि बोल्सोनारो को उसी संघीय पुलिस मुख्यालय में रखा जाएगा।

पाकिस्तान ने किया मिसाइल का परीक्षण
कराची। पाकिस्तानी नौसेना ने एक स्वदेश विकासित पोत रोशी बैलिंटरक मिसाइल का सफल परीक्षण किया है। इस मिसाइल को समुद्र और धरती, दोनों स्तरों पर देखने में सक्षम है। इंटर-सैरिज पर्लिक रिलेशंस (आईएसीआर) द्वारा जारी एक देखने के अनुसार, यह परीक्षण मंगलवार की सन्धिनीय नौसेना पर निर्मित नौसेना प्रतेक्षणमें से किया गया, जिससे देश की रक्षा क्षमताएं बढ़ी हैं। यह मिसाइल समुद्र और जीवन से हमले में सक्षम है।

इजराइल ने गाजा से भेजे शब्द पहचाने
युरशलाम। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने बुधवार को कहा कि उनके देश से गाजा से हाल में लाए गए एक शब्द की पहचान बैंकें द्वारा और उनके अवशेषों के शब्द बचे हैं। इजराइल-हमास संघर्ष विराम का पहला वर्षाना पूरा होने वाला है।

सरकोजी की दोषसिद्धि को बरकरार रखा
पेरिस। फ्रांस की शीर्ष अदालत ने पूर्व राष्ट्रपति निकोलास सरकोजी को उनके पुनर्निर्वाचन अधिनियम के लिए अधिक विरोधाभास के फैलावे को शब्द बचे हैं। इजराइल-हमास संघर्ष विराम का पहला वर्षाना पूरा होने वाला है।

गाजा संघर्ष विराम के दूसरे चरण पर त्रिपक्षीय बातचीत काहिरा। तुर्की के खुफिया प्रमुख ने कहाहिरा में अपने मिस्र समकक्ष और कतर के प्रधानमंत्री-सहविदेश मंत्री से गाजा संघर्ष विराम समझौते के दूसरे चरण पर चर्चा की। बातचीत का मुख्य अपने राष्ट्रपति को लेकर की गई हरकरत संघर्ष विराम को बनाए रखने तथा इसके अगे उल्लंघन को रोकने के लिए आगे बढ़ने के लिए जारी रखने के लिए बहुत बड़ा अभिशप है।

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारत ने अरुणाचल प्रदेश की रहने वाली एक भारतीय महिला के साथ शंघाई हवाई अड्डे पर बीच और पासपोर्ट को लेकर की गई हरकरत संघर्ष विराम को बनाए रखने तथा इसके अगे उल्लंघन को रोकने के लिए आगे बढ़ने के लिए जारी रखने के लिए बहुत बड़ा अभिशप है।

हसीना के प्रत्यर्पण पर बांग्लादेश को जवाब की उम्मीद ढाका/नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोके जाने पर विदेश मंत्रालय सख्त

चीन की हरकत संबंधों को सामान्य बनाने में बाधक नई दिल्ली, एजेंसी
भारतीय महिला को रोक

